

स्पन्दन

भास कोंकणी आवसु आमची। लिपि देवनागरी उडगासु दवराची।।

Date of Publication : 1st MAY 2019









केरळ कोंकणी अकादमी

कोच्ची

धा रुपया

मुखेल संपादक
सुरेश ए. शेणै

कोशाधिकारि
के. विजयन

वाँगडी
प्रो. जी. मोहन राव
9446369771

न्यायोपदेशक
अड.वी.एन. वसन्त कुमार

प्रचार-प्रसार
टी. आर. सदानन्द भट

Layout by :
K. Santhosh
Mob : 9895212521

17.3.19, कोच्चिमुल्लाक्कल श्री भद्रकाळी-श्री महाविष्णु देवळ, तिरुवंबाडी, आलपुषा:- साहित्य अकादेमी अनि कुडुंबी सेवा संघ हांच्ये संयुक्ताभिमुख्यारि जल्लेले "कोंकणी लोकनाच सुवाळों"- कार्यक्रमाचीं एदीं दृश्यं।

प्रति - ₹ 10/-
वार्षीक - ₹ 100/-

स्पन्दन

प्रकाशन : केरळ कोंकणी अकादमी, कोच्ची



SPANDAN
Published by :
KERALA KONKANI ACADEMY
8/28, 'Santhery', 1st Floor,
Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road,
Cochin - 682 002. Mobile : 94477 35849
Email : keralakonkaniacademy@gmail.com

खंड : 8 | अंक : 5 | 1941 वैशाख

संपादकीय

केरळान्तुले साहित्यकारांकयि तुल्य अवकाशु अस्स !

"कोंकणे" म्हळ्यारि गोंयकार मात्र न्हय। शेणै गोंयबाबानयि "गोंयकाराली गोंया भायली वसणूक" म्हळेले पुस्तकान्तु तेंचि तँ व्यक्त केल्यां।

मगीरि इत्याक साहित्य अकादेमी पुरस्कार इत्यादी गोवेतर संस्थानान्तु मेळनत्तिल्लें वत्ता ? प्रतिभाधन साहित्यकार गोंयान्तु मात्र न्हय, इतर संस्थानान्तूय अस्सय मू ! केरळचे (स्व) डॉ.एस. सुनिता बाय, के. अनन्त भट, सुशीला टी. भट, आर. एस भास्कर, सूर्या अशोक, एन. बालकृष्ण मल्या, वी. कृष्ण वाद्यार, भानुप्रकाश.... हंका सग्ग केद्दाण की ये पुरस्कार मेळ्का जल्लेले मू अस्सिले ! अत्तयँ अप्राप्य जाव्नु अस्स इत्याक ? इतूले काळीं, 2 मुख्य 6 अणकार अनि 1 बाल साहित्य पुरस्कार मात्र तँ मेळ्या केरळान्तु ! ह्यें पूरो वे ? अकादमीन्तुले कोंकणी सलाहगार समिति ये अन्याय सग्ग अनदेखी करतायि इत्याक ?

केरळचे जनांगेलो प्रतिषेधु हंगा अम्मि व्यक्त करतायि। 2019 वर्ष थकून पुणि सग्ग योग्य रितीन जत्तले म्होणु लेकतायि। शुभ प्रतीक्षेन...

कोच्ची, 01-05-2019 — सुरेश ए. शेणै, मुखेल संपादक.

29.3.19, टी. डी. हाईस्कूळ, कोच्ची :- रंगवेदी-गोश्रीपुरम हंगेले “अनामिका” कोंकणी नाटक अस्सिलें। वेदीर सुरेश वी. शेणै हंगेले “कवितामृत” (नाटक गान, कविता इत्यादि) कोंकणी पुस्तकाचेयि प्रकाशन जल्लें।

31.3.19, कला आनि संस्कृति संचालनालय, मल्टीपरपज हॉळ, (पाटो, पणजी) :- प्रतिक फांउडेशन हन्नि “सांज अमुरपिकी” (गोंयच्या मातयेंतली संगीतमय कोंकणी कार्यावळ) घडोव्नु हळ्ळी। मुंबय रेडियो केन्द्राचेर प्रसारित जल्लेली अनि इतर कोंकणी गींत प्रस्तुत केल्ले।

25-27, मार्च 2019, कला फांट्याच्या सेमिनार हाळ :- कविवर्य बाकिबाब बोरकार अध्यासन, कोंकणी विभाग, गोंय विद्यापीठाचो कम्प्यूटर सायन्स विभाग अनि गोवा कोंकणी अकादेमी एकमेळ्नु “भाशा-वर्धिनी” कार्यशाळा घडोव्नु हळ्ळी।

1.4.19, अंदूचे अस्मिताय पुरस्कार प्रभाकर भिडे हंका। गोंयान्तुले अस्मिताय प्रकाशनाचे रजत जयन्ती वर्ष ह्यें। सुमार 40 वर्ष काळांत प्रभाकर भिडे हन्नि “राजहंस वितरण” अनि “राजहंस संकल्पना प्रा. लिमिटेड” ह्या स्थापनां वट्टेन 1500 पस्सी चड पुस्तकँ उजवाडाक हाडल्या। हन्तु कोंकणी शिक्षणाचे उदरगतीक मोलादिक योगदान दिवचीं तराचि पुस्तकँ अस्सयि।

9.4.19, सारस्वत ओसोसियेषन हाळ, कोच्ची :- केरळ कोंकणी अकादमी अनि गोंयबाब यादस्तिक (गोंय) एकमेळ्नु केरळचे हाईस्कूळ अनि हायर सेकन्डरि विद्यार्थियांक बगेक प्रथम “शेणै गोंयबाब स्मारक कोंकणी प्रश्नोत्तरि” कार्यावळ घडोव्नु हळ्ळी। हन्तु कु. वेदवती एस.मल्या प्रथम एय्ली। कु. लक्ष्मीप्रसाद एस.प्रभून दुस्सरे स्थान प्राप्त केल्लें।

संतोषाचि खबर :- केरळान्तुले हाईस्कूळ-हायर सेकन्डरि विद्यार्थियांक बगेक/खातिर मत्सर/स्पर्धा घडोंव्चाक 2 धनराशि केरळ कोंकणी अकादमीक प्राप्त जाल्या। ✤ 'शणै गोंयबाब स्मारक कोंकणी प्रश्नोत्तरि'- पुरस्कारः प्रथम - Rs. 3,000, द्वितीय - Rs. 2,000, तृतीय - Rs. 1,000 (ट्रस्ट गोंयबाब यादस्तीक नावान शान्ताराम वर्दे वालावलीकार हन्नि Rs.1,50,000/-, धनराशि दिल्या। ✤ 'स्व. एल. सुनिताबाई स्मरणार्थ कोंकणी कविता-वाचन'- पुरस्कारः प्रथम - Rs. 5,000, द्वितीय- Rs. 3,000, तृतीय - Rs. 2,000 (अडॅ.वी. बालकृष्ण शेणै हन्नि - Rs. 2,50,000/- धनराशि दिल्या)। मत्सर दीसुः - **एप्रिल - 9** (सग वर्षायि)

संत केशवदासालि
हितोपदेश कथा - 46

प्रो. वी. शिवानन्द भट,
पंचाब्जपुरम

लोभी स्वर्णव्यापारी श्रीनिवास सन्त पुरन्दरदास जल्लो।

श्रीनिवास नाय्क एक लोभी स्वर्णव्यापारी अस्सिलो। तज्जेलगि होडि स्वर्णराशि अस्सिल्ली। पाण्डुरंगान तगेलें मनःपरिवर्तन कोरूक निश्चयु केल्लो। पाण्डुरंगान एक वृद्ध पुरुषाले वेषान तज्जेलगि वोचूनु पुत्ताले उपनयनाबगेक धनसहायु मग्गीलो। ते धनलोभी श्रीमन्तान एकेक निब्ब संगीलें। सोमवारा वच्चाक ताणे संगीलें. "आजि सोमारु, महादेवालो दीसु, फल्ले यो।" मंगळारा वच्चाक ताणे संगीलें, "आजि दुर्गामातालो दीसु।" हे प्रकारारि निब्ब सांगता गेल्लो। सात मास ताणे देवाक भोंवडायलो। आखेर देवालि क्षमा गेल्ली। श्रीनिवासाले घराकडे वोचूनु तग्गेले बयलेलगि धनसहायु निंवगीलो। ते दयालु बयलेन, "लोभी जीवनान्तु सुख ना" म्हणु मनां लेकूनु नंक्कारि अस्सिल्लि रत्नाचि फुल्लि काणु दिल्ली। लग्गी दिस्सा वृद्धवेषधारि पाण्डुरंगान लोभी श्रीनिवासाले अंगडीन्तु वोचूनु तज्जेलगि रत्नाफुल्लि काणु 400 स्वर्ण मुद्रा दिंवचाक संगीलें। ते लोभीक ती बयलेलि फुल्लि म्हणु मनां जल्लें। ताणे वृद्धाक लग्गी दिस्सा येंवचाक संगीलें अनी ताणे ती फुल्लि एक पेट्टान्तु दवरलि, अंगडि बन्ध केल्ली अनी धरारि घरकडे चमकीलो। घरां पांव्नु ताणे बयलेलगि तिगेलि नंका फुल्लि दाकयि म्हणु संगीलें। बयलेन देवाकूडान्तु वोचूनु देवालगि हात एकडे कोरनु प्रार्थना केल्ली, "देवा, तूं मक्का राक।" तुरन्त थंगा एक चमत्कारु जल्लो, तिगेलि नंका फुल्लि तिगेले हातान्तु येव्नु पळ्ळी। तिका विश्वासु जल्लोना। शीघ्र तीणे फुल्लि हाणु बमणाक दिल्ली। तो चकित जल्लो। तो धाव्नु अंगडीन्तु पांव्नु पेट्टान्तु चोयलो, परन्तु पेट्टान्तु फुल्लि ना। हे घटनेन श्रीनिवासाले दोळे विसकळायले। शीघ्र घरकडे वोचून बयलेले चरणान्तु पोणु ताणे तिज्जेलगि प्रश्नु केल्लो, "हे महान नारी, हांव अंगडीन्तुले पेट्टान्तु दवरलेलि फुल्लि तुका कशिश मेळ्ळी ? तूं विशद जाव्नु मका सांग।"

तीणे संगीलें, "पाण्डुरंगूचि वृद्ध पुरुष रूपान अयलोलो, तकाचि हांवें नंक्काफुल्लि दिल्लेली अनी पाण्डुरंगान तीचि फुल्लि मका दिल्ली।" हें अयकूनु, एक भक्तालें उत्तम जीवन स्वीकार कोरूक श्रीनिवासान प्रतिज्ञा केल्ली। सर्व त्यागु कोरनु परिवार सहित एक महान गुरुलगि वोचूनु शिष्यत्व स्वीकार केल्लें। अनन्तर लोभी श्रीनिवासु कलियुगवरद पाण्डुरंगालो नामी भक्त सन्त पुरन्दरदास म्हळेले नांवान लोकान्तु प्रसिद्ध जल्लो।

हें तुमका कळता व्हे?

कोंकण्यांगेले आचार-विचार

- सुशीला त्रिविक्रम भट, कोच्ची

"दायदीसु अथवा जन्म दिवसु...."

कुटुंब पुरोहिताक तां होमु घलचे, बाकी पूजा कार्यादि कोरचे सग्ग उत्तरवादित्व. कुल-देवता, इष्ट-देवता, ग्राम देवता, कुल गुरु आदीचीं प्रार्थना प्रथम जाव्नु केल्लेले उपरान्तें तां कार्यक्रम प्रारंभु जत्तोलो. ऊंच संगिल्ले देवतांक, गुरूक सग्ग "काणीक" काणु दवरपय अस्स. तज्जे उपरान्तें चेरडाले आवसु-बपसूकर्यान कुटुंबाचे म्हलगडे जनांक वीडो दीवनु पांय पोणु अनुग्रहु घेवपय अस्स. हंतु सग्ग विघ्नेश्वरालें स्थान सर्वप्रथमच तां.

आवसु-बप्पूसु, चेरडाक बेस्सोव्नु, मग्गीर तां होमु आरांभता. नवग्रह शांतीक संगिल्ले तराचे होम काष्ठानी, बाकी द्रव्यानी सग्ग आहूती दीवनु परिसमाप्ति जत्तरी आवसु-बपसू मद्दें चेरडाक बेस्सोव्नु "शोभान" म्होणु दिव्वे दक्कवप, शेष भरप सग्ग अस्स. हें जत्तरी बन्धु-बान्धवं, आमंत्रित जनां सर्वय चेरडाक पारितोषिक दीवप, हथांतु वीडो दवरप सग्ग करतलीं. मृष्टान्न भोजन दीवनु कार्यक्रम समाप्त जत्तले.

* थोगडी जनां दैदीसाक जैदीसु म्होणूय म्हणताय.

एक यात्री अनि मंकड



- ए. आर. प्रभु, कोच्ची

एक यात्रीक असि चोंव्कूनु वोच्चे वेळारि ताळो सुक्कूनु हरकटेव्नु एय्ले। मस्त सियाळीं, नार्ल अस्सिलो एकु मड्डो दिक्कीलो। ताजे लगि एक रुकारि एक मंकडयि बेसलें दिक्कीलें। यात्रीक एक बुद्धि दिस्सलि। सानूचि एकु फत्तोरु काणु मंकडाक विन्दीलो। मंकडाक दुक्कि पावली। ते मंकड लगि अस्सिले ते मड्यारि चळ्ळें। यात्रीन अनियेक फत्तोरु काणु विन्दीलो। मंकडाक तो लगलो ना। जल्यारीयि, तगेले ते स्वता बुद्धिये अनुसार मड्यावेले सिय्याळें काणु सोणु मारलें। यात्रीक सिय्याळें मेळ्ळें। ते सिय्यळा उद्दाक पीव्नु यात्री वापस यात्रा कोरूक लागलो।

15.4.19, रवीन्द्र कलाभवन, यूनिवर्सिटी कोळेज, मंगळूरु:- Mangalore University चे कोंकणी अध्ययन पीठ हन्नि "Beaming Rainbow" (Multilingual National Conference) घडोव्नु हळ्ळें।

पुस्तक प्रकाशन ✻ 23.3.19 ब्लॉक बॉक्स, रवीन्द्र भवन सभाघर, मडगांव :- "तळपावेली फुलां" (कविता संग्रह) - प्रकाश आचार्य ✻ 30.3.2019 लेखकाले घराकडे, सावयवेरें (गोंय) :- "रक्तचंदन" (कविता झेलो) - संजीव वेरेंकार ✻ 20.4.19, भोव उद्देशी सभाघर, कला आनी संस्कृती भवन, पण्जी :- "मनस्पंदनां" (कविता संग्रह) - शोभा फुलकार

संत कबीरदास दोहा -

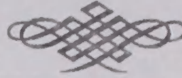


एन. लक्ष्मण मल्या, कोच्ची

"तत्त तिलक तिहुँ लोक मैं, राम नाम निज सार।
जन कबीर मस्तक दिया, सोभा अधिक अपार।।"

तिन्नीय लोकांतु श्रेष्ठ रामनाम तँ। अपण्याले सार तेचि तँ। जीवना शोभा रामनाम तँ। तें ना जल्यारि जीवन निस्सार तँ। निडल्यारि तिळ्या मट शोभायि तोची मेगेले विश्वास प्रतिकयि तँ।

अम्मा



- टी. उमेश भट, कोच्ची

अम्मा अम्मागे भूक लगतागे
भुक्केन मिगेलें पोट लसतागे
पोट्टान्तु मिगेले उण्डाळो एत्तागे
दोळ्यांतु मिगेले काळूकु दिसतागे।

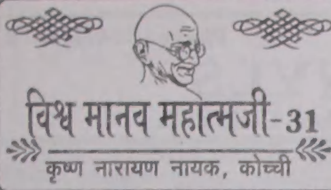
सित्ता घालूक वोरोवु ना मु रे
रंदयि कोरुक कसलेंयि ना मु रे
फण्ण घालूक तेलय ना मु रे
चायेक दूद पैंदार पल्लोय ना मु रे।

मस्कट कोरुक पिट्टियि ना मु रे
कल्लोवनु दिंवचाक फोवुय ना मु रे
निश्शें कोरुक लेल्लांवय ना मु रे
उक्कोणु दिंवचाक केळेंयि ना मु रे।

अंगडिंतु अम्मि कस्सि वत्तलिं रे ?
हत्तांतु अम्गोले दुड्डु ना मु रे
अप्पा मिगेलो खयिं गेल्लागे ?
दुड्ड घेवनु केद्दाणा येत्तलोगे ?

उश्शीणे दिंवचाक कोणय ना मु रे
लागि घरकडे निंगूनु चोयत्ता रे
भुक्केन देहाक नज्ज दिसतागे
देवु इत्याक अम्का दुःख दित्तागे ?

देवान केदनायि कष्टांतु घल्लारे
चांगु समयु अम्काय येत्तलो रे
अम्मा अम्मागे रोणक्कागे तूं
अम्मान रळ्यारी मक्काय रणे येत्तलें गे।।



"गान्धीजीलो उपवास"

फोनिक्स संकेत विजय पावलें। तसलीचि अनियेकि कोळनि स्थापन कोरूक गान्धीजीन निश्चयु कळ्ळो। दक्षिण आफ्रिक्येन्तूले त्या दुस्सरे संकेताक टोळस्टोय फाम म्हुण नांव गल्लें। गान्धीजीन आदरु कोर्चो रष्यान्तूलो एक प्रसिद्ध बरौपि तं अस्सिलो टोळस्टोय। मस्त भारतीय आनी यूरोपि जन ह्या नवें संकेतान्तु राबूक मुकारि आयले। तन्नि एकमेळ्नु राबूक आरांभीलें। संस्कार, संप्रदाय, जाति धर्मपथ... सग भिन्न आसूनूय ते मैत्रीन दीस काडताले। थांगा राबतल्यांले चेर्डुबाळाक सिकूक शाळो लागी ना अस्सिलि। गान्धीजीनचि तांकां सिकौंचाक आरांभीलें। दष्टीक अध्यापक तं अस्सिलो गान्धीजी। तस्सि अस्तना फोनिक्स संकेतान्तु एकु खेदकर संभवु घटलो। थंयचे दोनी वासीं भर्सि क्षोभान विकृत प्रवृत्ति जालि। गान्धीजी आयकून आश्चर्य चकित जालो। पुण तांका गान्धीजी कोपलोना। कारण सग्ग अनुयायीयि अपण्याले मोगाचे चेर्डुवां सरके गान्धीजीक ! जल्यारि झगडें केल्लेले दोग्गानींयि इतूलें अहित केल्यां ? तें तन्नि समझून पश्चाताप पांवका अस्सि गान्धीजीन अठैलें। शिष्यांले चूकीक उत्तरदायि सिकैतल्लो म्हुण गान्धीजीलें अभिमत। तें दिकून दोगयि जाणाले बगेक पाप परिहार अपण कर्ता म्हुण गान्धीजीन अनुमान केल्लें। सात दिसांक उपवास केल्लो। मगिरि दिसाक एक जेवण मात्र आरांभीलें। मास चव्वड भोगले। संकेतान्तूली सगटयी तजान मनान्तु बेजार जालीं। गान्धीजी तांका तितूलो प्रीतीचो तं अस्सिलो। पाप कोर्चें वोचून पाप म्हळेले आयकूचे सरि तांका अन्य जालें। गान्धीजीलें प्रथमलें उपवास यज्ञ अस्सिलें तें। नन्तर अपण्याले जीवितान्तु भारताचे उत्थान प्रवर्तनाक खेडदें आयलेले वेळेरि मस्त फन्ता उपवास तन्नि केल्लो। गान्धीजीलो सुधार मार्ग, जालो उपवास। त्या हदीन प्रौढ जयु गान्धीजीन प्राप्त केल्लो। निराहारान अपण्यालो जीवूचि अपायान्तु गलतरि समझतलिं, सम जत्तलीं। सत्या भागान अस्सिल्यांक सद्प्रवर्तनान्तु विघ्न एत्तरि मरण भीती सरि नात्तिलें मुकारि वचाक जत्तलें म्हुण गान्धीजीलो विश्वास। मुकारि वत्ता तसीचि चड चड लोकान यें मनान्तु केल्लें। मनशुद्धि लक्ष्य पवित्रता नात्तिले एकल्यान सरि उपवास परीक्षण कोरुक नज म्हुण गान्धीजीन स्पष्ट सांगील्यां। हरिशरणागत जावनु सद्कार्याक उपवास कोर्का सिवाय ती उपाधि दिखावटाक जावचाक नज। सदुद्देशाक मात्र तें आयुध फलप्रद म्हळेले प्रमाण गान्धीजी राकतालो। ❋

गुरु गोविन्द स्मरण

- विलासिनि नायक, कोच्ची

प्रातःकालारि करताय प्रणाम
जगत्गुरु श्री वेदव्यासाक,
अज्ञान म्हळ्ळेले अन्धकाराक
दूर केल्लेले ज्ञान दिव्याक।।

सांज-सकाळीं करताय नमन
सूर्योज्वलु ते श्रीरामाक
रावण रूपी मद-मोहाक
संहारु केल्लेले सीतापतीक।।

सन्ध्यावेळारी करताय स्मरण
भक्तप्रियु ते नरसिंहाक
अहंकारमूर्ती हिरण्यकषिपूक
नाशु हळ्ळेले प्रहळाद नाथाक।।

नित्य निरंतर करताय वन्दन
कलियुगेशु ते वेंकटपतीक
संसाररूपी ये भव सागराक
तारक कारण श्री लक्ष्मीरमणाक।।

सदा सर्वदा सेवन गुरुवर्यांक
सर्वथा आराध्य धर्ममूर्तींक
दोषांनि पतित शरणागतांक
पावन कोर्चे प्रत्यक्ष देवांक।।

कोंकणी खबरेक
चोय्यायि/पळेयात
facebook
कोंकणी केन्द्र-गोश्रीपुर

विडंबनात्मक पद प्रयोग पळया

- नागेष अण्वेकर, कारवार

गोड़ हाड्रक गेलो	कोयट जालो	जाग सोडलो
गोव्वर जालो	यमान आपयलो	जाग खाली केलो
किमसलो	स्वास राबलो	टिकेट काडलो
थंड जालो	स्वास थाब्ले	सोण्ण गेलो
कंवटलो	टाटा केलो	जवराय कडेन
षेळे जालो	मेलो	मुद्दो जालो

चौपदी

- एन. सदानन्द कम्मत, कोच्ची

उद्दाक पिल्यारि वत्ता तान
खाण खेल्यारि वत्ता भूख
उजवाड एयल्यारि वत्ता
काळूकु
ज्ञान मेळ्यारि वत्ता अज्ञान।।

धन्य जल्लो...

- लता रंग मल्लन, माळा

धन्य जल्लो यो जन्मु देवी
धन्य जल्लो यो जन्मु
श्रीचक्ररूप दक्कोवुनु
तुज्जे सान्निध्य तंतु पावोंनु
ते दोळे भरि चोवुनु
धन्य जल्लो यो जन्मु
जय देवी जय, गौरी जय (2) (धन्य)

दुःख सागरांतु बुड्डल्ले अम्का तूं
नीट कोरनु उँचारि हळ्ळिं मू
तज्जान व्होड्डु संतोषु पावुनु
तुज्जेरि भक्ती अम्का चळ्ळि मू तुज्जेरि
भक्ति अम्का चळ्ळि मू
जय देवी जय, गौरी जय (2) (धन्य)

चांगि वाट अम्का दक्कोंव्का
ते वट्टेन अम्का व्होरनु
चंगपण अम्मि सर्वयि कोरनु
तुज्जेरि भक्ति अम्का चळ्ळि मू
जय देवी जय, गौरी जय (2) (धन्य)

अनिकेयि देवी अम्का सोणक्का
अनिकयि तू अम्का पावूंका,
अनिकयि अम्का चोवूंका
अम्चे मन्त्र भक्तीन भोरुका
जय देवी जय, गौरी जय (2) (धन्य)

देवाले अक भजन

- वी. मोहना टीचर, कोच्ची

हरे राम हरे कृष्ण भजन कोरूक
सर्व जन अम्मि एक मेळूयां
गोविन्द गोपाल केशव माधव
म्होणूनु अम्मि सर्वे भजन कोरूयाँ।। (हरे)

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।

गोविन्द गोपाल म्होणूनु अम्मि
आनन्द सागरांतु स्नान कोरूयाँ
केशव माधव म्होणूनु अम्मि
ह्या जगत्वान्तु थकूनु मुक्ति पावुयां।। (हरे)

आरती वेंकटपतीक

- आर. एस. भास्कर

आरती उंवाळूं — आरती उंवाळूं
मंगळमूर्तेक — शंखचक्रधारीक
पद्मावती प्रियाक — दीनदयाळाक
श्री वेंकटरमणाक — श्री पद्मनाभाक

आरती उंवाळूं — आरती उंवाळूं
ऐश्वर्यमूर्तेक — भक्तजनप्रियाक
श्री शैलवासाक — विश्वपालकाक
श्री वेंकटेशाक — श्री वेंकटाचलपतीक

26.4.19, गोंय :- कला अकादेमीन आयोजित केल्लेले 43 वे कोंकणी नाट्यसर्तींतु (नाटक मत्सरान्तु) प्रथम पुरस्कार - "चिरेबंदी वाडो", दुस्सरें - "बनवड", तिसरे - "द ओपन कपल"

त्रेताग्नि



गार्हपत्य
दक्षिणाग्नि
आह्वनीय



परीक्षा



- ऋषिका वी. प्रभु, कोच्ची

भव्य जत्ता हूम एत्ता
परीक्षेचो वेळु जत्ता
सिक्किलें कांयि उडगासेना
म्हुणु 'कम्प्लेय्न्ट' अय्कूक एत्ता ।।

वच्चूनत्तिले देव्ळांतु वत्तायि
देवाचे मुक्कारि रोणु रब्तायि
राम-राम म्हणतायि आंगवण करतायि
अनिक कोर्नत्तिले इति अस्स म्हुणु संगायि ।।

उदाकेय पीनायि खाणेय खाय्नायि
उल्लोंव्चाकेय तीं विसर्तायि
दीसु सगोळु बुक्कान्तु बुडतायि
फल्लेंफल्यारि निदेतायि ।।

एशि सिक्कूनु इत्ति प्रयोजनु ?
मत्यांतु अस्सिनेंयि भायर वत्ता
'टन्शन' काणु चिन्तन कोर्नु
असिलो वेळु पेल्यांघल्लायि !

एक वर्ष भोर्नु मेळता
जल्यारीरि कोण सिक्कता ?
लक्कां मारनु फुटबॉल खेळनु
दीस सग पेल्यां घल्लायि ।।

पूरो करायि मनोरंजन !
सिक्कूक चोय्यायि मनान !
परीक्षा पांवता धरारि !
स्वप्नां जावोयि सफल !

कोंकणी - മലയാളം - English

- शैलेष कम्मत. एम्., कोच्ची

बर्प - എഴുത്ത്, കത്ത് - Letter
कागत - കടലാസ് - Paper
लकोटो/ लोकोट्टो - കൂട് /ലക്കോട്ട് /കവർ - Envelope / Cover
दस्कत/हस्ताक्षर/ओप - കൈയ്യൊപ്പ് - Signature
म्होरो / शिक्को - മുദ്ര - Seal
तींत - മഷി - Ink

कोंकणी प्रसारण - आकाशवाणी | कारवार : (सग्ग बिरेस्ताराचे संजे 5.00 - 5.30)
धारवाड (765 Khz) MW: (सग्ग सोमाराचें रत्ति 10.00 -10.30 जाई-जूई कार्यक्रमु)
तृश्शूर (630 Khz) MW, कोपिकोड (684 Khz) MW : (मंगळाराचे संजे 5.00 धोर्नु 5.15 पर्यन्त)

अम्गेलि रांधणि

बायलाँ खातिर (ददल्यांकय) - उषा आर. भट, हैदराबाद

सामग्री

1. पिकण्डेलोलो चांगु घीरु अस्सिल्लो गंवचो अम्बो - व्होडु एकु (¼ कि. तस्सिल्लो घीरु मेळचे तस्सि)

2. उडदाचि दाळि - 100 ग्रां	6. हिंगा पुड्डि - ½ चिपट
3. सुक्कि मिरसांग - 6	7. मिट्टाचि पुड्डि - 1 चिपट
4. नरलाची सोयि - एक वोळ्याचि	8. तेल - भजपाक
5. हळदी पुड्डि - ½ चिपट	

उणे तेल्लान्तु, परिमळु एवु मॅरि उडदा दाळि भज्जूनु काडका। मगीरि, उणे तेल्लान्तु सुक्कि मिरसांग, कुटके कॅरनु घालनु भज्जूनु रण्णीरि सुक्कूनु खाल काडका। यें दोन्नीयि, निंवतरि, वन्नान्तु घालनु पिट्टो कोर्का। नन्तर तन्तूचि सोयि, अम्ब्या पेस्सीयो, हळदी पुड्डि, मिट्टा पुड्डि इत्यादीक घालनु चांग जाव्नु वट्टूनु काड्का। हिंगा पुड्डीयि फप्पूणु चांग प्रमाणि मिश्रण कोर्का। (वट्टितना उद्दाक घालूक नज्ज, अम्ब्या कुटके उद्दाक सोडतले) 

सुभाषित

प्रो. के.एन.आर.भट
कोच्ची

"न जातिनं कुलं तात, न स्वाध्यायो न च श्रुतम्
कारणानि द्विजत्वस्य वृत्तमेवत्हि कारणम्
धर्मस्य सत्यं च तपोदमश्च अमात्सर्यं ह्रीस्तितिक्षानसूया
दानं श्रुतं चैव धृतिः क्षमा च महाव्रता द्वादश ब्राह्मणस्य।।"

- महाभरत - उद्योगपर्व

एकल्याले जनन जावो, जल्लेले कुल महिमा जावो, वेदांचि सिक्वण जावो, कित्याक ? तगेले पाण्डित्य जावो न्हयि तक्का 'ब्राह्मण' जाव्नु लेक्कूक योग्यता प्रदान करता। केवल तगेले सद्गुण तँ. ती योग्यता तक्का दित्ता! स्वधर्म पालन, सत्यव्रत, इन्द्रिय संयमन, ब्रह्मज्ञानाचेरि तानॅ, त्या खत्तीरि तप अनुष्टान, मात्सर्य बुद्धि नत्तिल्ले रब्बप, लज्जा (दुसर्यां मुक्कारि हाथ उद्दारि कॅरनत्तिल्ले रब्बप) सहनशीलता, दुस्सर्यांगेले दोष ना उणत्व सोड्डूनु नत्तिल्लें रब्बप, यथाशक्ति दान कॅरप, शास्त्रज्ञान, सत्य धर्म रक्षणाक जीव त्यागु सरि करच्याक सन्नद्धता (धैर्य) आनी क्षमाबल - ये गुण ब्राह्मणानी एक व्रता लेकान जीवनान्तु पालन कॅरका जल्लेले बारा गुण तँ।

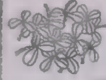
सूरदास भजन

- के. अनन्त भट, कोच्वी

ह्या पटि खंडित मेगेलो मानु राक गिरिधारी
कशि की राकलो पार्थालो मानु
भारत युद्धांतु भारी।।
सारथि जाव्नु रथु धांवुडायलो,
चक्र सुदर्शन धारी।
भक्तवचन अनुसारी, ह्या पटि...।।
कशि की राकलो द्रौपदिलो मानु,
करचाक सोडणीं उदारी।
तांडून-तांडून भुजं हारवलीं
दुःशासनागेलीं भारी।।
वस्त्र वाडेयलें मुरारी, ह्या पटि....।।
सूरदासागेलो मानु राक, करि आत्तां तैयारी।
राधे! राधे! कृष्णाले मोगाचे,
कृष्णागेली प्रियकारि।।
हांव तुजे शरणारि, ह्या पटि...।।

ह्ये भजन 1978 क मंगळूरु A.I.R. न्तु प्रस्तुत केल्लेलें।

गायक : पं. उपेन्द्र भट



कोण ?

- कु. अञ्जली किणी, कोच्ची

बेस्सूनु मेजे भीतर
उल्लयता कोणय निरन्तर
सग प्रश्नाचेय दित्ता उत्तर
कोणाले कळना ते स्वर।
स्पर्श कोरुक हत्तान्तु मेळना
कसलोय पोरमोळु येना
ह्ये दोळ्यान हांव पळयना
ते कोण इत्ते म्हुण कळयना।
कोण मेंजे नियन्त्रण करता
कोण मेजी संकाळा धरता
धांवचाक संगल्यार हांव धांवता
संगिल्ले लक्ष्यारि पांवता!
भितरचि शक्ति ती अपार
तजान चलत्ता ह्ये शरीर
मत्यान्तु खेळ्ता मस्त विचार
मेजे अस्तित्वाचे आधार।
मेजे भित्तर-भायर जत्ता इत्ते ते जाण
ते कशि म्हुण हांव कांय नेण
मेजे भित्तेरि बेसले ते कोण
तेंचि वे धोरनु रावला ह्यो प्राणु।

खीळ्या छाप



- वसन्तकुमारी पी. एस., कोच्ची

शंकर महा विकृति चेल्लो ! कोणाकयि पुणि द्रोहु दिल्लोना जल्यारि तेद्दस तक्का नीद पोण्णा। बप्पाक शंकराक उपदेशु दीव्नु दीव्नु पूरो जल्ले। मग्गीरि कोणेयि शंकरा पस्सूनु फुराति (पराति) संगील्यारि बप्पा धरारि कूडीचे कवडाक एकु खीळो मरतोलो। तश्शि भोर्नु खीळे कवडाक मारले।

एक दिसा शंकरालो स्वभावु पोरतोलो। ताणे कोणाक पीडा दिवना मात्र न्हयि, तज्जान जवंचो उपकारु सेज्जारि अस्सिल्यांक कोरूकयि आराम्बीले। एक्केक चाँग वार्ता अय्कतरीयि बप्पूसु एक्केक खीळो निकळाव्नु दूरा उड्डेयतोलो। अन्तिम खीळो कडचे वेळारि शंकरु बप्पाले पय्यांकडे पोणु रळ्ळो। "बप्पा, सांग ! खीळे कळ्ळे जल्यारीयि तज्जे छाप वोच्चुन्ना मू ?" "उत्तलेयि चाँग केल्यारीयि फूडे दिल्लेले द्रोह जनांले मन्नान्तु थकूनु वोच्चुन्ना मू। ते दिक्कूनु अम्मि बल्लावपण म्हळेले कोरूक पाणा। उडगासु दव्वरि।" बप्पान पुत्ताक संगूनु समझायलो। जाण जाव्नु अम्मि कोणाक द्रोहु दिंव्चाक नज्ज !

साहित्य अकादेमी अनि कोंकणी

❀ 27-28 अप्रैल 2019 साहित्य अकादेमी सभाघर, दादर (पूर्व) मुंबई :- साहित्य अकादेमी अनि आशावादी प्रकाशन, मुंबई एकमेळ्नु "कोंकणी में महिलाओं का साहित्य" संगोष्ठीचे आयोजन केल्लें।

❀ 20-21 एप्रैल 2019 नेचर्स नेस्ट, सुरला, साकोरडें, गोंय :- साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित "पूर्वोत्तरी एवं पश्चिमी भारतीय काव्योत्सव"न्तु प्रकाश पाडगांकर, भूषण भावे, रोझारियो पिंटो, रमेश घाडी, आर. एस. भास्कर, राजय पवार, दिलीप धारगळकर ह्यीं कोंकणी प्रतिनिधीं अस्सिलीं।

रस्पति - आर. के. प्रकाश, पल्लूर



Dr. P. N. N. सिंह
डॉ. प्रश्नु ना नरसिंह
SSLC, PDC, BSc.,
MBBS (3 times)

घोणी कण्णन - डॉक्टर, मक्का दिखिल जल्यार साक्षाल कृष्णुवरि दिस्ता वें ?

डॉक्टर : प्रश्नु ना, दखद दित्ता। वचे वट्टेरि तंभीडे फूल दोनीय कन्नारीय दवरूक विस्रूक नज। ना जाल्यार तूं एकवेळे विश्वरूप दर्खोवचाक साध्यता आसा।

* * * *

कीरतन मोहन : डॉक्टर, मुदी तिरुपतीन्तु दवोर्नु दिक्कूक पॅणा। इत्ति परिहारु ?

डॉक्टर : प्रश्नु ना, "गोविन्दा - गोविन्दा" योच परिहारु।

"भांगरभूंय" कोंकणी दिनपत्र वच्चायि
ओणलैन:
epaper.thegoan.net



परणी म्हण्णी (गोंय)

- श्रीदेवी सुरेश प्रभु, कोच्ची

* चोराक आपलें धर परकें।

* खांकून खांकून गांवकार जाता।

* बायलांली विद्या रात्री पल्लांत।

* काम करता तोच चुकता।

* भितर आयल्यार वाग,
भायर गेल्यार कोलो।

आळें (കടങ്കഥ / Riddles)

"झाडारि फल, फलारि झाड !"

अनवास

बेईवांलि चित्रं





कु. अखिलेश वी. पै (11)। कोच्ची वेणुगोपाल ए. पै अनि गीता हांगेलो सुपुत्रु।

ब्रह्मोपदेश

- पी. एस. प्रदीप, कोट्टयम

"बौलिंग"ाक बादा जाता जनुवे
तशिचि "बाट्टींग"ाकेय
ओड्डून सम कोरनु घालका
एक पवटी न्हय, शंभर; दीसभर.
सोडवण कशें म्होणु
विचारचे कोणाले ?
निमगलें उपदेश दिवचो
कोण आस शेजार ?
वाट कशें ? वाट कशें ?
माथे हून करता
न्हीदान्तुय, जागेन्तुय एकचि हुसको
"अप्पा" दूर गांवांत भोंवडीर
देखून, कुडीन्तुली दिवली जळोवचा-
मेळो अवसर।

पयलें अवसर
पयलें कार्य करचे चूकु नज
अचूकपणान पळयलें कुडीन्तु.
हाय हाय !
अप्पाने जनुवे देखलें
हाथ-बोट पावनत्तिले उँचारि
खिळेरि लंबलें.
"म्हालगड्यानीं करचे पळोवनु अभ्यास कर"
ब्रह्मोपदेश उडगास मनान्तु जागेलो
शीघ्र मडतेल अणि खिळो वोचून घेवन येयलो
पगरारि खिळो मारचो शब्दु
"कूडीन्तु कसोलो शब्दु तो ?"
प्रश्न कोरनु आवसु येवनु पळयतना
स्तब्ध जली !
हालता सान जनुवे; खिळेरि
संत - संत - संत

(अस्सि जंव्वाक पाणा म्होणु व्यंग्य) ⌘



विनंति

- वी. लक्ष्मण पै, कोच्ची

नरमृगरूपा श्री नरसिंहा
नरजन्मु सफल तुजे दर्शनान
अष्टक-स्तोत्र तें मृत्युभय नाशक
कीर्तन कारण मोक्ष प्रदायक (नर)

उग्ररूपी जांवन तूं हिरण्याक मारलो
भक्तप्रह्लादाक तूंचि रकीलो
भक्तालो दासु भक्तवत्सलु तूं
देवादि देवांक तू जगदीशु (नर)

काशीमठाधीशांक तूंचि आराध्यु
क्षमा कोर्का अम्चो सर्व अपराधु
कल्मष दूर कोर्नु दींवका सद्बुद्धी
पयमुणांतु अस्सिलि यी विनंती (नर) *

वैशाख मास

- एन. माधव रावु, कोच्ची

चैत्र मासाचे अमावासीचे लगिचे दीस धोरनु वैशाख मासु शुरु जाता। ये महीनेन्तु तं कूर्मावतारु, अक्षय तृतीया, बलरामावतारु, परशुरामावतारु, नरसिंहावतारु, वैशाख पौर्णमि (बुद्ध पूर्णिमा) इत्यादि विशेष दिवस एत्तायि।

कूर्मावतारु - वैशाख शुक्ल द्वितीय दिवसु महाविष्णून कूर्म रूप काणु मन्दर पर्वताक फट्टीन उब्बार्नु समुद्र घंटूक देवासुरांक शक्ती दिल्लि।

अक्षय तृतीया - वैशाख शुक्ल तृतीया। ये दिवस दान दिंवचे, दान घेंव्चे, नवें आभरण घेंव्चे सग श्रेयसकर तं।

परशुराम जयन्ति - वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीयेक तं। तेदूस नक्षत्र पूर्णवसु, समय रात्रीचे प्रथम याम। कृष्णावतारान्तु बलराम जलोलोयी येचि दिवस तं।

नरसिंहावतारु - वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्दशी दिवसु संध्या समयारि हिरण्यकशिपाक मर्चे खतीरि खंभो फुटून अवतार अयिलो।

वसंत ऋतूंत वैशाख मासान्तु तं तिरुपति श्रीनीवास - पद्मावति विवाह जालोलो आनी योची मासु तं वलगे मासुयि।

गाय



- कलाकान्त, पळ्ळूर

गाय तू इत्या रडता ?
दूध तुजें वसराक दिवूंक जालेना की ?
तुजो मोगु सोण तें धूर धावलें की ?
अकस्मात आज तू कित्याक रडता ?

दोळे धळ-धळेंवचें रण्णें तुजें
देकून माजें मन्न सण सणवेचें
पेज, निर्शे, केळें ते सर्वे
ताव तावळि तुका दित्ता न्हवें ?

गाय तू कित्या रडता ?
वासराक घेव्नु गांवु भोंवुं म्होणु की ?
ताजे लागि अपुरबाय करुक की ?
अकस्मात आज तू इत्या रडता ?

कृष्णान तुका आपेयल्ना म्होणु की ?
ताजी पिरलूक आयकिल्ना म्होणु की ?
मनुष्याल दुष्कर्म दृष्टांत देकून की ?
गाय तू आज कित्याक रडता ?

सात जन्माचें सौभाग्य मु तू
स्वयं श्रीकृष्णाल मोगु मु तू
दूध, तूप, लोणि तें सर्वे
दिंवची पुण्य गोमाता मु तू।



Mangala Marine Exim India Pvt. Ltd.
CCXVI / 368, Bhat Memorial Building
Thoppumpady, Cochin 682 005, Kerala, India
Tel: +91 - 484 2231096, 2231730, 2233369, 2238393 - 95
Fax: +91 - 484 2232750
Mail: mangala@mangalagroup.com
www.mangalagroup.com

Reg. No. KERKON/2012/45527
Vol. No. 8 Issue No. 5
Rs. 10/- No of Pages: 20 **SPANDAN**
Published by : KERALA KONKANI ACADEMY, KOCHI
Registered KL/EKM/732/2018-2(
Licence No. KL/CR/EKM/WPP-22/2018-2(
Licensed to Post Without Prepaymen
Date of Posting 10. 05. 201

Printed and published by Suresh A. Shenoi on behalf of Kerala Konkani Academy and Printed at M/s. Prakash Process, Srinivasa Mallan Road, Ernakulam, Kochi - 682 035, Ph: 2350960 and Published at 8/28, Santheri, 1st Floor, Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road, Kochi - 682 002. Editor - Suresh A. She